No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-14

01079

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2011

एम.एच.डी.-14 : हिन्दी उपन्यास-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *पहला और छठा प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **2x10=20**

(a) तुम आदर के योग्य थी, मैंने तुम्हारा निरादर किया। यह हमारी दुरवस्था का, हमारे दु:खों का मूल कारण है। ईश्वर वह दिन कब लाएगा कि हमारी जाति में स्त्रियों का आदर होगा। स्त्री मैले-कुचैले, फटे-पुराने वस्त्र पहनकर आभूषणविहीन होकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर झोपड़े में रहकर, मेहनत-मज़दूरी कर, सब कष्टों को सहते हुए आनन्द से जीवन व्यतित कर सकती है। केवल घर में उसका आदर होना चाहिए, उससे प्रेम होना चाहिए।

(b) उधर बाबू ज्ञानशंकर नैराश्य के उन्मत्त आवेश में गंगातट की ओर लपके चले जाते थे, जैसे कोई टूटी हुई नौका जल तरंगों में बहती चली जाती हो। आज प्रारब्ध ने उन्हें परास्त कर दिया। अब तक उन्होंने सदैव प्रारब्ध पर

विजय पायी थी। आज पासा पलट गया और ऐसा पलटा कि सँभलने की कोई आशा न थी। अभी एक क्षण पहले उनका भाग्य-भवन जगमगाते हुए दीपकों से प्रदीप्त हो रहा था, पर वायु के झोंके ने उन दीपकों को बुझा दिया।

(c) अगर तुम आत्मप्रशंसा करते, अपने कृत्यों की अप्रत्यक्ष रुप से डींग मारते, तो शायद मुझे तुम से अरुचि हो जाती। अपनी त्रुटियों और दोषों का प्रदर्शन करके तुमने मुझे और भी वशीभूत कर लिया। तुम मुझ से डरते हो, इसलिए तुम्हारे, सम्मुख न आऊँगी, पर रहूँगी तुम्हारे ही साथ। जहाँ-जहाँ तुम जाओगे, मैं परछाई की भाँति तुम्हारे साथ रहूँगी। प्रेम एक भावनागत विषय है, भावना ही से उसका पोषण होता है, भावना ही से वह जीवित रहता है और भावना ही से लुप्त हो जाता है।

(d) त्यागिनी बन कर उसने उसका असली रूप देखा, कितना मनोहर, कितना विशुद्ध, कितना विशाल, कितना तेजोमय। विलासिनी ने प्रेमोद्यान की दीवारों को देखा था, वह उसी में खुश थी। त्यागिनी बनकर वह उस उद्यान के भीतर पहुँच गयी थी - कितना रम्य दृश्य था, कितनी सुगंध, कितना वैचित्र्य, कितना विकास। इसकी सुंगध में, इस की रम्यता का देवत्व भरा हुआ था। प्रेम अपने उच्चतर स्थान पर पहुँच कर देवत्व से मिल जाता है। जालपा को अब कोई शंका नहीं है, इस प्रेम को पाकर वह जन्म-जन्मांतरों तक सौभाग्यवती बनी रहेगी।

2. प्रेमचंद की जीवन दृष्टि का मूल्यांकन कीजिए। **10**

3. ज्ञानशंकर की रचना प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' में किस उद्देश्य से की है ? स्पष्ट कीजिए। **10**

4. 'रंगभूमि' में अभिव्यक्त तत्कालीन समाज का विश्लेषण कीजिए। 10

5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आन्दोलन और महिलाएँ विषय पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए। 10

6. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए। 5x2=10

(a) प्रेमचंद की साहित्य विषयक अवधारणा

(b) 'सेवासदन' में भोली का चरित्र

(c) 'प्रेमाश्रम' में जमींदारी-प्रथा

(d) 'रंगभूमि' में औद्योगीकरण